हे राम मुझे कहीं ले चलो

हे राम मुझे कहीं ले चलो, जहाँ तेरे सिवा कोई न हो।
जो कुछ देखें मेरी अखियाँ, वहाँ तेरे सिवा कोई न हो।।१।।

जग से बेगाना बना दे मुझे, तेरे जग में मेरा कोई न हो।
मर जाऊँ तोरे मन्दिर में, बस तू हो और कोई न हो।।२।।

तन को क्या फिर जो भी हो, इसका मुझको क्षोभ नहीं।
तेरे सिवा कोई अन्य हुआ, जायेगा इसका क्षोभ नहीं।।३।।

पिया ऐसी जगह अब ले चल मुझे, जहाँ तेरे सिवा कोई न हो।
मैं बातें करूँ पुकारा करूँ, पर सुनने वाला कोई न हो।।४।।

मेरा मन तड़पे और भड़क उठे, वहाँ तेरे सिवा कोई न हो।
मैं राह देखूँ और चौंक पड़ूँ, पर आने वाला कोई न हो।।५।।

गर नयन लड़ें तो तुमसे लड़ें, उन नयनों वाला कोई न हो।
कोई कर पकड़े तो तेरा हो, और कर वाला कोई न हो।।६।।

मुझको गर कोई बुला ही ले, वहाँ तेरे सिवा कोई न हो।
मेरे प्राण प्रिय तू जल्दी आ, अब ले जा जहाँ कोई न हो।।७।।

प्रार्थना शास्त्र नं. १/१७४

अर्पणा भजनावली - पृष्ठ ४२०

अनुक्रमणिका

३ **अपने लिए धड़कने वाले दिल...**
सभी के लिए धड़कने लगे!
श्रीमती पम्मी महता

८ **"साधना क्या है कौन करे,**
बिन गुरु कृपा यह न हो सके"
डॉ. जे. के. महता

१० **'है भी होसी**
जाइ न जासी
रचना जिनि रचाई।'
अर्पणा प्रकाशन 'जपुजी साहिब' में से

१६ **'चोर भक्त'**
सुश्री छोटे माँ

२१ **राह भी राम...**
साधक है राम...
लक्ष्य भी यह राम है...
'मुण्डकोपनिषद्' में से

२५ **'दान केवल धन का ही नहीं होता...**
...अपने आप का भी होता है!'
अर्पणा प्रकाशन 'श्रीमद्भगवद्गीता - भगवद् बाँसुरी में जीवन धुन' में से

३१ **सद्गुरु के क़दमों में बैठने का अर्थ...**
...उन्हें दत्तचित्त हो कर सुनुँ!
श्रीमती पम्मी महता

३५ **अर्पणा से समाचार...**

❖ ❖ ❖

सम्पादक की ओर से

गद्य में प्रस्तुत सभी लेख साधकों के प्रश्नों के उत्तर में परम पूज्य माँ द्वारा प्राप्त सत्संगों पर आधारित हैं और संकलन-कर्ता की निजी समझ के अनुकूल हैं। काव्य की पंक्तियाँ पूज्य माँ के मुखारविंद से प्रवाहित दिव्य प्रवाह का अंश हैं; जिसे सुश्री छोटे माँ ने लेखनी बद्ध किया है। अपनी पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उसे ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुति में किसी भूल के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

सम्पादक : *पूनम मलिक*
सह सम्पादक : *श्रीमती साधना पाल*

पता : अर्पणा आश्रम, मधुबन, करनाल
१३२ ०३७, हरियाणा, भारत

श्री हरीश्वर दयाल, अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन, करनाल १३२ ०३७ ०१, हरियाणा द्वारा १ जून २०१६ को प्रकाशित तथा सोना प्रिन्टर प्राईवेट लिमिटेड, एफ -८६/१, ओखला इण्डस्ट्रियल एरिया फेज़-I, नई दिल्ली ११० ०२० द्वारा मुद्रित

अपने लिए धड़कने वाले दिल...
सभी के लिए धड़कने लगे!

श्रीमती पम्मी महता

परम पूज्य माँ, पूज्य छोटे माँ, श्रीमती पम्मी महता एवं परिवार के अन्य सदस्य

पूज्य छोटे माँ,

सादर प्रणाम!

कौन कहता है कि आप हमारे साथ नहीं हैं... यक़ीनन हैं! क्योंकि परम पूज्य श्री हरि जगद्‌जननी माँ हमारे साथ हैं... तो आप कैसे अलग हो सकते हैं! परम पूज्य माँ ने मुझे यही कहा था, "पम्मी, मैं अपने बारे में क्या बताऊँ तुझे! ऐसा करो, तुम छोटे माँ के पास जाओ। वे ही तुझे मेरे बारे में बतलायेंगे!"

पुष्पों से सुसज्जित!

सच ही, आपने ठीक कहा था। भगवान अपनी महिमा का सामगान कस गायेंगे?

- प्रभु राम की महिमा बाल्मीकि जी ने गाई!

- श्री कृष्ण की महिमा वेद व्यास जी ने गाई!

- आप श्री हरि माँ प्रभु जी की गाथा पूज्य छोटे माँ ने गाई!

- और ज़माना इसे सदा गाता रहेगा...

कलियुग में हे श्री हरि परम पूज्य माँ, आपने अवतरित हो कर ही हमें सुझाया कि हम सभी के आंतर कालिमा से भरपूर हैं। 'मैं' अहंकार की चोटी पर बैठ कर कितने

अर्पणा मन्दिर!

अपराध करती है व मोह माया के जाल में फँस कर किस क़दर अपने को भ्रमित कर रही है...

एक तरफ़ छोटे माँ, आप हमें परम पूज्य श्री हरि माँ की गाथा सुनाते और साथ-साथ श्री हरि माँ हमें हमारी भूलों से अवगत करवाते व सत्पथ पर चलने को अग्रसर करते, क्योंकि इस युग के प्रभाव से आंतर कालिमा से जो भरे हुए हैं!

सत् के आईने में जब हम अपनी सीरत व सूरत देखते तो आत्मग्लानि भी होती और दूसरी तरफ़ सत् की ज्योत्सना देख, अपने आपको भूलकर, उसी तरफ़ आकर्षित हो जाते... क्योंकि सत् के उजाले में ही अपने दर्शन होते हैं। आप परम पूज्य माँ, यूँ मुझे मेरी

सत्यता दिखा कर कहते, "forget it! चल आगे चल!" मुझे कहीं ठहरने ही नहीं दिया। मेरी ज़िन्दगी में वह पल आने ही नहीं दिये कि 'हाय! मैं ऐसी क्यों हूँ, मैं वैसी क्यों हूँ'... और सत् की ओर अग्रसर होने को प्रेरित करते रहे।

मोह, माया के जाल ने जीवन में क्या-क्या गुल खिलाये हैं..! उसका चित्रण आप छोटे माँ शास्त्र आधारित शब्दों से वर्णित करते। हाँ! यहाँ यह अवश्य बताना चाहूँगी कि सभी शास्त्र परम पूज्य माँ के अनुभवी क़दमों से लिखे हुये हैं! आप माँ की जीवनी हैं यह! इसीलिए बड़ी ही अद्‌भुत व विचित्र व आनन्दित करने वाली जीवनी है!

अपने आपको चहुँ ओर से समेट कर व स्वयं को भूल कर, ग्रहण करने वाला यह विलक्षण व दिव्य ज्ञान, विज्ञान है। यहाँ अपनी याद आना, अपने आप में एक गुनाह है। बहुत ही नसीबन वाले हैं हम, जिनके नसीब में भगवान जी परम पूज्य माँ के वेष में हमारे लिए अवतरित हुये हैं... और पूज्य छोटे माँ आप तो इस अनुपम व दिव्य जीवन के साक्षी भी हैं और आपके जीवन को इस परम दिव्य प्रसाद से नवाज़ा भी है। धन्य हैं आप व आपका जीवन, जो श्री हरि माँ की असीम करुण-कृपा से धन्य-धन्य हुआ!

छोटे माँ, श्री हरि माँ ने आपका जीवन इतना सुन्दर बना दिया कि सम्पूर्ण जगती जितनी, जब भी आपके सम्पर्क में आई, सभी ने यह दिव्य जीवन प्रसाद आप से पाया। और इस प्रकार जीवन निहाल होते चले गये। सभी मन, जिज्ञासु बन, आगे से आगे माँ की जीवनिया को जानने की अभिलाषा से सदैव ओत-प्रोत रहने लगे!

पूज्य छोटे माँ, आपकी ज़िन्दगी की सुन्दरता केवल इस पर आश्रित नहीं करती कि आप कितने ख़ुश व आनन्दित हैं!.. सच कहूँ, छोटे माँ, आपके होने से कितने ही लोग ख़ुश व आनन्दित हुए! हमें तो कोटि-कोटि धन्यवाद श्री हरि माँ का करना चाहिए, जिन्होंने हम जैसे जीव जगत के लिए धरा पर अवतरित होने का निर्णय लिया; ताकि हमारे आंतर का कालिमापूर्ण युग, सत्‌युग की आग़ोश में जा विलीन हो जाये!

आप परम पूज्य श्री हरि माँ की आग़ोश में सदा-सदा के लिए सिमट जायें - जहाँ कुछ माँगने की नहीं बल्कि सम्पूर्ण रूप से स्वयं को श्री हरि चरणन् में समर्पित करी, अपने प्रति अखण्ड मौन का प्रसाद पा, वहीं समाहित हो जायें! आमीन।

बहुत दिया है आपने छोटे माँ, परम पूज्य श्री हरि माँ की निरन्तर महिमा गाये करी! हम उनकी बानी का परम सत्य हृदयों में धारण करते हुए जीवन जीयें। हरि ओऽम्!

धन्य हैं आप श्री हरि परम पूज्य माँ व पूज्य छोटे माँ!

- अपने लिए धड़कने वाले दिलों की किस सुन्दरता से मुहार मोड़ दी!

- अपने लिए धड़कने वाले दिल... सभी के लिए धड़कने लगे!

- अपने लिए सभी कुछ चाहने वाले दिल... सभी के लिए सभी कुछ चाहने लगे!

यह सच है-

- अपनी याद जहाँ हर पल आती थी...

आज वही याद, सभी की याद में जा समाहित हो गई है!

- अपना स्वार्थ, निःस्वार्थता में जा परिणत हो गया!

जिन्होंने दिलों को धड़कना सिखाया, उन दिलबर को सलाम!

उन्होंने ही हमें इक दूसरे से मिलाया,

इस अद्‌भुत व सुन्दर मिलन के लिए उन्हें सलाम!

उन्होंने इस क़दर अपनी मुहब्बत में इसे डुबोया कि फिर वहाँ से उभरने ही नहीं दिया!

पूज्य छोटे माँ इसमें आपका अंतरंग सहयोग मिला, इसके लिए हे हरि माँ व छोटे माँ आप दोनों को सलाम!

आप मौन हो गये, जा इक दूसरे में समाहित हो गये... फिर भी अतीव मुहब्बत भरी गुज़ारिश है आप से! मुझे अपने में ही स्थिरता प्रदान करी लिवा ले जाईयेगा... जो आप दोनों की ही सेवकाई में सदा रहूँ!

पूज्य छोटे माँ, आप मेरे ज़हन में हो इसके लिए बहुत-बहुत शुक्रिया!

कितना प्यारा नाता देई करी, माँ ने हमें सखियाँ बनाया - इस साख्य भाव के लिए उनका बहुत बहुत शुक्रिया!

आपने भी छोटे माँ, सदा निभाई दोस्ती मुझ संग, इसलिए धन्यवाद करते हुये आपका करती हूँ शुक्रिया!

'मैं' की प्रवृत्ति से निवृत्त करवाने के लिए आपने परम पूज्य माँ संग पूर्ण सहयोग किया इसके लिए आप दोनों का ही बारम्बार करती हूँ शुक्रिया!

जो परम लक्ष्य दिया हुआ है परम पूज्य श्री हरि माँ ने मुझे, कभी भी न भूलूँ उसे और आप छोटे माँ की मदद से चलती ही चलूँ... जब तलक पूर्णतया जा उनमें विलीन न हो जाऊँ! आपकी रहमतों का करती हूँ शुक्रिया!

माटीवत् जीने का परम सौभाग्य व परम आशीर्वाद पाये रहूँ, इतनी ही विनती आज करूँ!

अनुनय विनय स्वीकार करना! केवल मेरी यही करबद्ध प्रार्थना है तहेदिल से। परम पूज्य श्री हरि माँ व आप पूज्य छोटे माँ आप दोनों का व बाक़ी सभी के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हुये रुख़सत होती हूँ। ❖

"साधना क्या है कौन करे, बिन गुरु कृपा यह न हो सके"

डॉ. जे. के. महता

डॉ. जे. के महता, उनकी धर्मपत्नी एवं परम पूज्य माँ!

'मैं कौन हूँ...' इसकी खोज और अपने स्वरूप की पहचान के लिए 'मैं तन नहीं', 'मैं मन नहीं', 'मैं बुद्धि नहीं, मैं आत्मा हूँ' इसका अभ्यास ही मेरे जीवन में साधना का एकमात्र रूप था। उपनिषदों का महावाक् "अहं ब्रहमास्मि" ही मेरी सारी साधना का आधार था और इसका श्रवण, मनन, निदिध्यासन का अभ्यास और "ॐ" शब्द का उच्चारण और आन्तर में ज्ञान रमण और उस पर ध्यान लगाने को ही मैं साधना मानता था।

"ॐ" शब्द का उच्चारण तो किया परन्तु उसका प्रथम पाद "वैश्वनर", विराट रूप जाने बिना हम अगला क़दम कैसे धर सकते हैं, यह भूल गया। यह ज्ञान तो ठीक है, परन्तु इससे जीवन की दिनचर्या में "सर्व अखिलं ब्रह्म" तो नज़र नहीं आया। कण-मात्र की विपरीतता आ जाने पर मन भड़क जाता था, दूसरे पर दोष मढ़ता था और उसके प्रति अपने कर्तव्य का भी त्याग कर देता था। राग-द्वेष भी आन्तर में वैसे ही भरे थे। मन आन्तर में ध्यान मग्न रहना चाहता था। बाह्य जग की विपरीतता इस ध्यान में बाधा बनती जाती थी, इसलिए मन संसार से दूर भाग कर एवं सबको त्याग कर एकांत स्थान में ध्यान समाधि के आन्तरिक आनन्द की ओर भागता था। मुझे अनुमान भी न था कि साधक भाव का सूक्ष्म अहंकार आंतर में अंधकारमय आवरण बनकर दिन प्रतिदिन दृढ़ हो रहा है।

ऐसी मनो अवस्था में परम पूज्य माँ के साथ मेरा सम्पर्क हुआ। इनके जीवन में "सर्वभूतहितेरतः" और साधारण दिनचर्या में सम्पूर्ण दैवीगुणों (प्रेम, क्षमा, दया, करुणा) की अनोखी झलक मिली। दूसरे के स्तर पर जा, उससे पूर्ण तद्रूप हो कर उसकी बाह्य तथा आन्तरिक समस्याओं का समाधान करते हुए, मैंने इनकी पूर्ण आत्मविस्मृति देखी और देखा कि सब के लिये सब कुछ करते! किसी पर कोई एहसान नहीं, अधिकार नहीं। अपने और पराये, मित्र और शत्रु में भेदभाव का नितान्त अभाव, निरहंकारता, असंगता एवं समत्व, जिन गुणों का पठन मैंने गीता में किया था, उनका दर्शन तथा प्रमाण मुझे परम पूज्य माँ के

जीवन में मिला। जिस ज्ञान का जीवन भर अभ्यास करने की चेष्टा करता रहा, गीता के उन श्लोकों को मैंने पूज्य माँ के जीवन में साकार होते हुए देखा। जो ज्ञान आज तक केवल शब्दमात्र था, मानो सप्राण हो उठा और जीवन में एक नया उत्साह जाग उठा कि यह ज्ञान केवल पठनीय ही नहीं बल्कि जीवन में अनुसरणीय और सम्भव है। अन्य का अपने प्रति व्यवहार कितना भी विपरीत एवं विनाशकारी क्यों न हो - परम पूज्य माँ का आन्तरिक मौन कभी भंग नहीं हुआ! इनके जीवन में से करुणा, प्रेम व क्षमा जैसे सम्पूर्ण दैवीगुण सहज ही प्रवाहित होते हैं।

अपने प्रति नितान्त मौन होते हुए भी पूज्य माँ स्वयं मानो दिव्य न्याय की प्रतिमा हैं। उनके सामने एक व्यक्ति दूसरे पर अत्याचार नहीं कर सकता। एक व्यक्ति दूसरे का अधिकार नहीं छीन सकता, एक व्यक्ति अपने लिए दूसरे का दुरुपयोग नहीं कर सकता। प्रश्न पूछने पर "माँ! आप यह सब कैसे कर पाते हो" तो कहते हैं, ***"राम ने भेजा आपको, मुझे राम ही मिल गया"।*** यही तो विराट रूप उस वैश्वनर की पूजार्थ जीवन का अर्पण है। परम पूज्य माँ के जीवन के प्रकाश में अपना आन्तरिक अंधकार और तथाकथित ज्ञान रमण में अपनी अज्ञानता पल-पल दर्शाने लगी और इस बात की समझ आई, 'आवरण मिटाव ही साधना है!' अनायास ही गुरु का यह महा प्रसाद पाकर मेरा जीवन धन्य हो गया, मुझे लगा मुझे राह मिल गई।

अपनी ओर से शास्त्रों का अध्ययन और अनुसरण करते हुए भी, परम पूज्य माँ के सम्पर्क में आकर पता चला कि मेरी भूल कहाँ हुई! परम पूज्य माँ ने बताया, 'अव्यक्त पर ध्यान लगाने से पहले अपने सामने खड़े इनसान को तो देखने का अभ्यास करो। वह तो बोल रहा है, उस का जीवन तो व्यक्त है। यदि तुम व्यक्त को ही न जान सके तो अव्यक्त को क्या जानोगे?'

दूसरा जब सामने आता है हम उसे अपनी मान्यता राही देखते हैं। अपना ही कोई दोष उस पर मढ़ कर उसके बारे में अपनी राय कायम कर लेते हैं। अपनी दोष दृष्टि का आवरण डाल कर दूसरे का मूल्य डालते हैं। इसलिये कोई हमें रुचिकर लगता है, कोई अरुचिकर! कोई अपना लगता है, कोई पराया। राग-द्वेष पूर्ण यह दृष्टि साधारण जग को ही नहीं जान पाती, तो अव्यक्त ब्रह्म को यह कैसे जानेगी? अव्यक्त ब्रह्म पर ध्यान लगाने से पहले निष्काम कर्म द्वारा चित की पावनता अनिवार्य है। जीवन में यज्ञ, तप, दान के अभ्यास से ही यह पावनता आती है। दूसरों के हित में उनके तद्रूप होकर अपने तन को उनकी सेवा में लगा देना ही दान है। ऐसा करते हुए आन्तर में मौन का अभ्यास ही तप है। परिणाम में सुख मिला या दुःख मिला, मान मिला या अपमान मिला, दूसरे ने पहचाना या नहीं; इन सब पर ध्यान न जाकर आन्तर में मौन हो जाना ही तप है। दूसरे के सुख, हित और स्थापति अर्थ अपना पूर्ण भुलाव ही यज्ञ है। इस अभ्यास के परिणामस्वरूप तनत्व भाव अभाव और चित शुद्धि में ही नाम का जन्म होता है और चित चरणों में टिकता है।

शास्त्रों में मैंने पढ़ा था कि साधना पथ पर गुरु कृपा अनिवार्य है - जीवन में इसका दर्शन पाना, शास्त्र का वास्तविक रहस्य भी गुरु के जीवन राही ही खुलता है और जीवन में उनके पदचिन्हों का अनुसरण ही साधना है।❖

(पुष्पांजलि अभिलेख)

'है भी होसी

जाइ न जासी

रचना जिनि रचाई।'

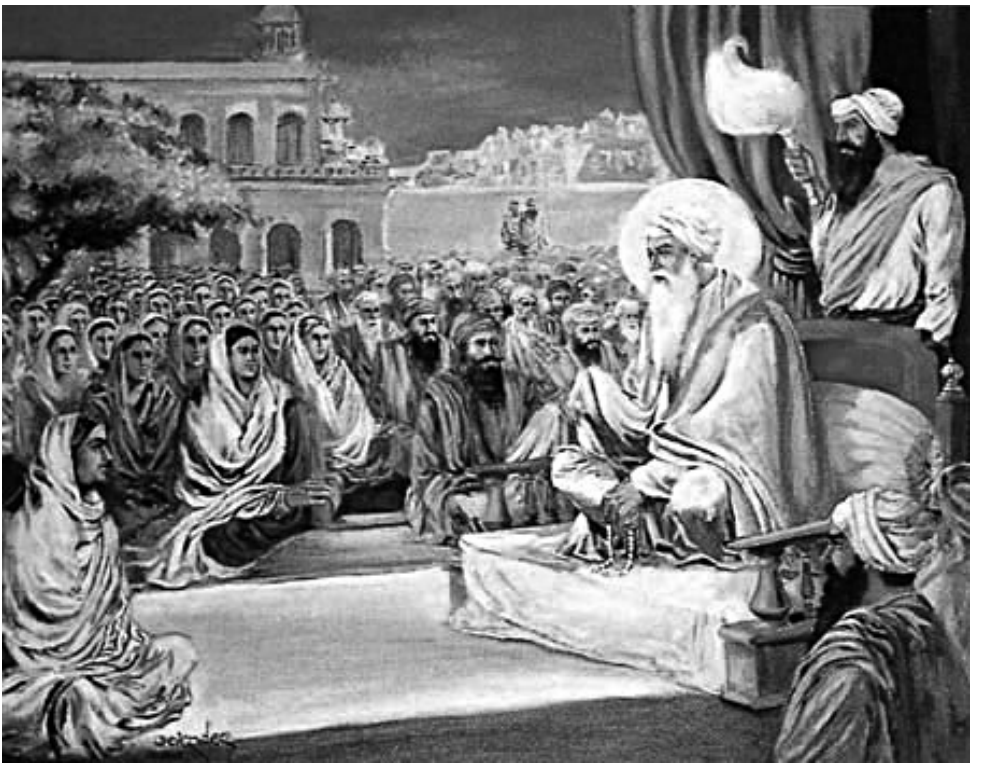

गतांक से आगे-

पौड़ी २७

सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले।
वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे।
केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे।
गावहि तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे।
गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे।
गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे।

गावहि इंद इंदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले।
गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे।
गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे।
गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले।
गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले।
गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले।
गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे।
गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे।
सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले।
होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ वीचारे।
सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई।
है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई।
रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई।
करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिसदी वडिआई।
जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई।
सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु, नानक रहणु रजाई।।२७।।

शब्दार्थ : वह दर कैसा है, वह घर कैसा है, जहाँ बैठ कर वह सब की सम्भाल करता है! अनेक असंख्य नाद बजते हैं, अनेक उनके बजाने वाले हैं। अनेक राग-रागिनियों सहित गाते हैं तथा अनेक उनके गाने वाले हैं। वायु, जल तथा अग्नि आपकी महिमा गा रहे हैं, धर्मराज भी द्वार पर आपकी महिमा गा रहे हैं। चित्र गुप्त आपके गुण गाते हैं जो लेखा लिखना जानते हैं और लिख-लिख कर धर्म को विचारते हैं। शिव, ब्रह्मा और देवी-देवता, जो सदैव ही सुन्दर हुए शोभा देते आपकी महिमा गा रहा है। सिद्ध समाधियों में बैठकर आपकी स्तुति गाते हैं और साधु विचार कर स्तुति गाते हैं। यति, सति और सन्तोषी भी आपके गुण गाते हैं, और बलवान योद्धा भी गुण गाते हैं। पण्डितगण ऋषियों के ग्रंथ पढ़-पढ़ कर, युग-युग वेदों के साथ आपकी ही महिमा गाते हैं। स्वर्ग-लोक, मृत्यु-लोक तथा पाताल लोक में हृदय को मोह लेने वाली स्त्रियाँ आपकी महिमा गाती हैं। आपके पैदा किये हुए रत्न, अठसठ तीर्थों के साथ आपकी महिमा गाते हैं। बड़े बड़े महाबली तथा शूरवीर भी गाते हैं, चारों दिशायें भी आपकी महिमा गाती हैं। नौ खण्ड (नव ग्रह), सप्त-द्वीप तथा ब्रह्माण्ड, जो बना-बना कर आपने धारण किये हैं, वह भी आपकी महिमा गाते हैं। वही आपकी स्तुति गाते हैं, जो आपको अच्छे लगते हैं। प्रेम में रंगे हुए आपके रसीले भक्त और भी अनेक जन, जो आपकी महिमा गाते हैं, वह मेरे स्मरण में नहीं आते। नानक उनका विचार क्या करे? वह ही सच्चा स्वामी है, जो सदैव सत्य है, जिस सच्चे का नाम सच्चा है। वह अब भी है, आगे भी होगा, न कहीं जाता है, न जायेगा। जिसने इस सृष्टि की रचना की है, रंग-बिरंगी, भांति भांति तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की रचना करके जिसने अपनी माया उत्पन्न की है, वह अपना किया संसार रच कर आप ही उसे देखता है। जैसे उसकी इच्छा होती है, जो उसको अच्छा लगता है, वही वह करता है। उसके ऊपर कोई आज्ञा नहीं की जा सकती। वह स्वामी, बादशाहों का भी बादशाह है। हे नानक! उसकी आज्ञा में ही रहना चाहिये।

पूज्य माँ :

कैसा घर कस दर होगा, जहाँ से जग रहा सम्भाल।
पूर्ण जग का एक रचयिता, और एक ही खेवनहार।।१।।

अनेकों साज़ साज़ी अनेकों, राग रागिनी हज़ार।
गावन वाले लाखों वहाँ पे, रखवाला इक कर्तार।।२।।

हर नाम रूप है उसका साज़, वा राग है हर आवाज़।
पवन अग्न गुण गावें उसके, वा दर अखण्ड बहार।।३।।

धर्मराज यमराज वा चाकर, हर पल ठारे प्रभु द्वार।
वह प्रभु की तान प्रभु का साज़, वह कर्म प्रभु की आवाज़।।४।।

गुप्त चित्र जीवन के जाने, जो लिखे रेखा की धार।
केवल प्रभु का गान करे, लिखी लिखी करे वा विचार।।५।।

शिव ब्रह्मा तेरे गुण गावें, तू ही रचे उन्हें कर्तार।
इन्द्र सिंहासन चढ़ी तव गावे, लिये संग देवता हज़ार।।६।।

सिद्ध गावें गान समाधि राह, साधु गायें करी विचार।
संतोषी यति तपस्वी गायें, गावें वीर योद्धा करें कमाल।।७।।

ऋषि पण्डित वाक् ही गावें, पढ़ी वेद ग्रन्थ हज़ार।
मन मोहक मनमोहन गावें, आकाश ज़मीन पाताल।।८।।

भक्तगण महिमा वा गायें, जायें तीर्थ पुकार।
बलि योद्धा गायें सूरमा, चहुँ ओर करें गुंजार।।९।।

अखण्ड भूमण्डल तेरी गावें, गावे सुन्दर संसार।
नाम रूप और सगरे काज, गावें तव महिमा अपार।।१०।।

जो तेरी गावें तुझको भायें, जिनमें श्रद्धा है अपार।
केवल तू जिस हृदय बसे, भक्ति रस रंगी तव सार।।११।।

लाखों अन्य भी गावें गान, कहें नानक याद न आवें नाम।
जड़ चेतन सब तुझे पुकारें, विचारूँ मैं कितने नाम।।१२।।

पूर्व आधुनिक आगामी गावें, सम्पूर्ण हैं तेरे काम।
साँचो इक तू साहिब मेरा, साँचो बस तेरो नाम।।१३।।

रंग बिरंगी अच्छी बुराई, माया राह दुनिया रचाई।
वह स्वयं रचे और स्वयं ही देखे, कितनी है उसकी बड़ियाई।।१४।।

करे वही जो उसको भावे, उसका हुक्म कोई टाल न पाये।
कहे नानक वा रज़ा निभाये, शेख़ बादशाह जो करें फ़रमाये।।१५।।

हम क्यों न कहें :-

पूर्ण जग है महिमा तेरी, हर नाम रूप तव गान।
जानूँ मेरे नानक बादशाह, साँचो केवल तव नाम।।१।।

रहीम है तू करीम है तू, हर कर्म करे तव गान।
कछु भी जग में न होये, जो नहीं है तेरो राम।।२।।

आधुनिक क्या आगामी क्या, सब है तेरो काम।
अखिल अखण्ड एको बस तू है, सब हैं तेरे नाम।।३।।

सर्वव्यापी अधिपति तू, मायापति तव नाम।
जगद्पति तू कालपति, ज्ञानपति विज्ञान।।४।।

प्रजापति तू गुणपति, कर्मपति तव नाम।
वाक्पति तू भावपति, हर शक्ति करे तेरा गान।।५।।

को' गुण गाऊँ को' नाम लूँ, हर वाक् है तेरा नाम।
कौन बात को' चर्चा हो, हर चर्चा तेरा गान।।६।।

श्रीमती देवी वासवानी : इसका अर्थ यह हुआ - जानना यह है कि हर नाम रूप तू है।

पूज्य माँ :

नाम रूप सब तू ही है, अब नज़रे इनायत हो जाये।
मेरे मेहरबान मेरे बादशाह, शिकायत मन में न रह पाये।।१।।

तेरा नाम साँचो बादशाह, इक नाम की बून्द मिल जाये।
सूखी बग़िया बंजर यह, पल में मोरी खिल जाये।।२।।

रहमत कर मेरे मालिका, करुणानिधि निधान।
चरण में बैठ के माँगूँ तुमसे, आज एको वरदान।।३।।

तेरे नाम की नाद मैं सुना करूँ, हर जा सुनूँ तेरा गान।
अखण्ड नाद तेरे नाम की, मुझे मिल जाये भगवान।।४।।

ओ मेरे मालिका ख़ुदावन्द तू, मेरे नानका भगवान।
दया भी तू दीनाबन्धु तू, तू है मेरा भगवान।।५।।

ओ नानक नानक नानका, तेरा हुक्म तेरा फ़रमान।
सम्मुख मेरा सीस ही झुका रहे, अब साँचो तेरा नाम।।६।।

तेरी महिमा हर है नाम रूप, तेरी महिमा सगरे काम।
हर जा तुझको देखा करूँ, और महिमा का करूँ गान।।७।।

ओ मेरे नानका तू दरियादिल, तू दे मुझको वरदान।
चरण में तेरे पड़ी रहूँ, और गाऊँ तेरा नाम।
बस गाऊँ तेरा नाम, मुझे मिल जाये तेरा नाम।।८।।

तेरा हुक्म न टल पाये, अब तेरा हुक्म ही हो जाये।
दीदार तेरा हो जाये, मुझे प्यार तुझी से हो जाये।।९।।

दिले बेक़रार मेरा हो जाये, और रहमत तेरी हो जाये।
ग़रीबपरवर तू दीनानाथ, मेहरबान तू हो जाये।।१०।।

पाप विमोचक मल विमोचक, निर्मल मन मेरा हो जाये।
पावनकर्ता दुःख विमोचक, उद्धार मेरा भी हो जाये।।११।।

भव भँजना उज्ज्वलकर तू, विशाल मन मेरा हो जाये।
नाम की महिमा नित गाये, और तोरे चरण में खो जाये।।१२।।

पर तब ही तो यह हो पाये, गर हर पल लें तेरा नाम।
जो भी सुनें जित भी देखें, वहाँ देखें तेरा नाम।।१३।।

बस नानका तेरा नाम मिले, मिल जाये तेरा धाम।
जित भी अब यह मन जाये, वहाँ मिल जाये तेरा नाम।।१४।।

श्रीमती देवी वासवानी : यह गुप्त चित्र, जो विशेष कहा है, यह क्या है?

पूज्य माँ :

गुप्त चित्र में जो बसे, यह चित्त की चाल है जो।
जानूँ मेरे नानका, वह नाम तेरा ही हो।।१।।

जो समझ पड़े समझ आये, अचेत में भी है जो।
जो गिरह पड़ी जड़ चेतन की, वहाँ भी नाम तेरा हो।।२।।

मेरे बादशाह मेरे नानका, मेरे मालिका तुम हो।
हर ही भाव में भवसागर में, बात तो तेरी हो।।३।।

ओ मेरे बादशाह मैं तुझे कहूँ, अर्द्ध चेत तुम हो।
चेत है तू चेतनता इनमें, ज्ञान तेरा ही तो हो।।४।।

यहाँ क्या पड़ा क्या नहीं पड़ा, समझ परे वह हो।
हाय नानका मेरे बादशाह, उसे पावन तुम ही करो।।५।।

हुक्म रज़ाईं सब चलें, तेरी ये रज़ा से हो।
साहिब मेरे मौला तू, पावन चित्त यह करो।।६।।

एक ही बात कर रहे हैं - जो तूने कहा सो हो जाये।

श्रीमती देवी वासवानी : यदि बुद्धि इसको मान जाये, तो सारे द्वन्द्व मिट जायें।

पूज्य माँ : आप क्यों नहीं कहते :-

तू परम पुरुष पुरुषोत्तम, तू ही तो है परमात्मा।
चरण में मुझको रहने दे, तू ही है मम आत्मा।।१।।

सर्वव्यापी सर्वाधार, निराकार परमात्मा।
सर्वात्म सर्व अन्तर्यामी, विश्वपति सर्वोत्तमा।।२।।

कहें निर्विकार तू आप है, अप्रमेय तू आप है।
चिन्तन में जो आ न सके, अतीन्द्रिय रूप तू आप है।।३।।

अशोच्य तू निर्वाद तू, अकथ्य तू ही आप है।
असीम तू सीमा परे, पर सीमित भी तू आप है।।४।।

क्या गुण गाऊँ क्या नाम मैं लूँ, हर नाम भी तू आप है।
हर रूप भी तू आप है, हर रूप परे तू आप है।।५।।

सब कुछ है बस नाम तेरा, हर जा है बस धाम तेरा।
क्या महिमा गाऊँ तेरी, सब कुछ है इक गान तेरा।।६।।

- क्रमश :

'चोर भक्त'

सुश्री छोटे माँ

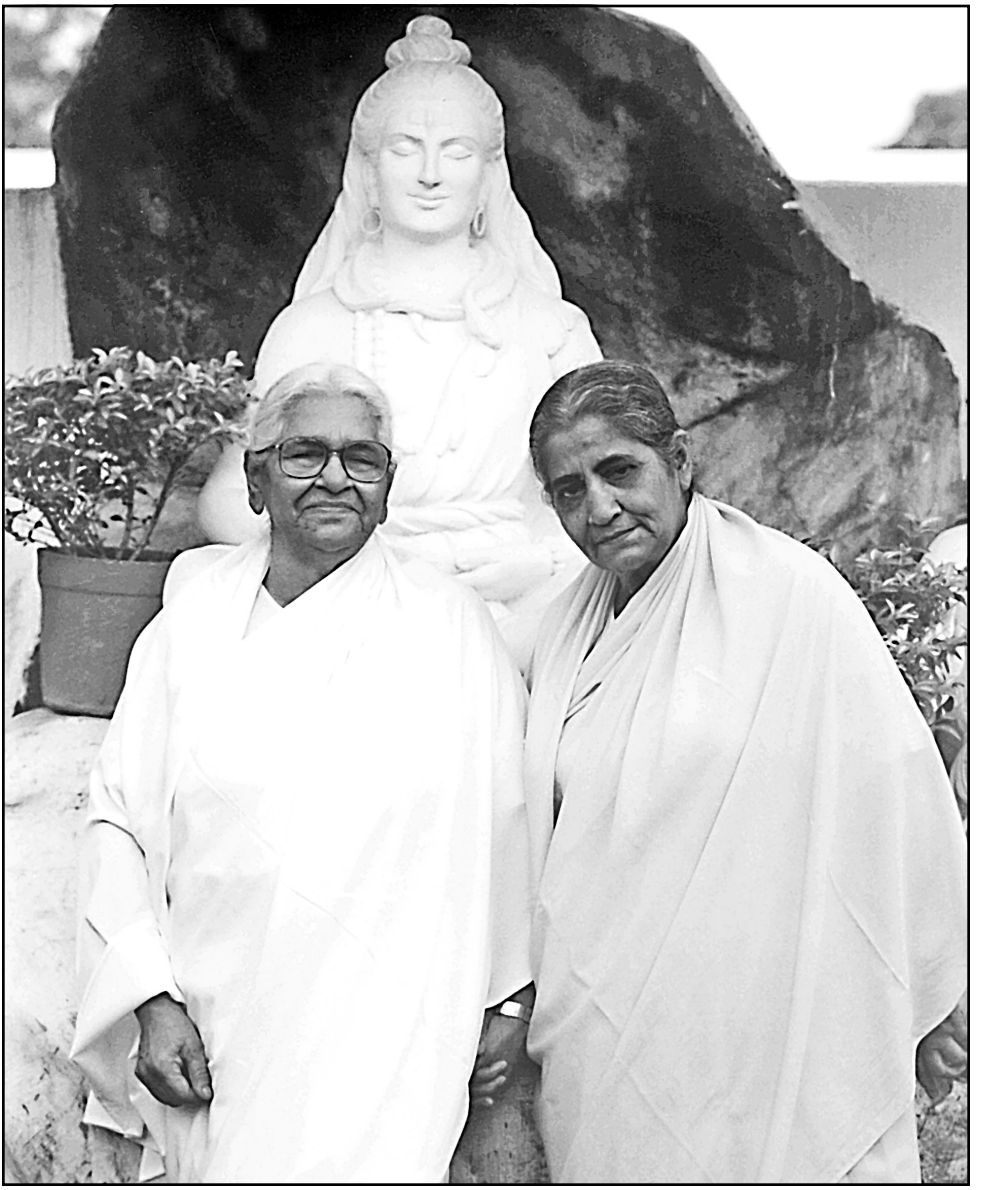

आसुरी स्वभाव उचित और अनुचित को नहीं देखता। उसके पास रुचि की प्रधानता होती है। अज्ञानता उसे अंधकार की ओर ले जाती है। किसी के लिये कुछ कर सके इस ओर ध्यान ही नहीं जाता। वह तो दूसरों को इनसान भी नहीं मानता। ऐसे लोग

अपने स्वार्थ के लिये जीते हैं, अपने को श्रेष्ठ मानते हैं। समझते हैं कि वे जो कुछ भी करते हैं वह उचित ही है। लोगों को लूटना तो उनका गुण बन गया होता है। उनके जीवन में सत्यता का कोई काम नहीं होता।

ऐसा एक जीव जंगल में रहा करता था। अपने परिवार में साधन जुटाने वाला और धन कमाने वाला वह अकेला ही था। बचपन में माता-पिता की मृत्यु हो गई। अन्न पाने के लिये एवं पेट की भूख मिटाने के लिये उसके पास कोई भी साधन नहीं था। उस शिशु ने सबसे अन्न प्राप्ति की प्रार्थना करी परन्तु दूर-दूर भटकने के पश्चात् भी वह दो मुट्ठी अन्न प्राप्त न कर सका। भूख और पिपासा ने उसे चोरी के लिये बाधित कर दिया।

जब इस प्रकार से पेट की भूख मिटने लगी तो उसे ऐसा लगने लगा कि यही एकमात्र साधन है जिसके द्वारा भूख को मिटाया जा सकता है। वह उसी को धन कमाने का साधन समझकर जीवन में जीने लगा। यौवनावस्था आई। परिवार बढ़ने लगा। परिणामस्वरूप उसने यह सोचा कि विवाहित जीवन में परिवार की पालन-पोषण की यही विधि है। जीवन इस प्रकार से व्यतीत होता गया। परिवार में पारस्परिक प्यार का भाव भी जागृत हो गया परन्तु जीवन में जीने का साधन वही चोरी ही रही।

भगवान की कृपा दृष्टि का प्रसाद मिला। उसी गाँव में साधु मण्डली, महात्मा जन आये। वह वहीं पर कुछ मास रहे। प्रातः और सांयकाल को सत्संग चलता रहा। उस हरिचर्चा तथा उन संतजन की सेवा का प्रभाव उस चोर पर बहुत पड़ा। मनुष्य जीवन को सार्थक करने का भाव उठा। उसे लगा कि मैं तो इसका पात्र नहीं हूँ, परन्तु उसकी तीव्र जिज्ञासा ही उसे खींच कर गुरु शरण में ले गई। गुरु के चरणों में जाकर उसने अपने आंतरिक भाव को प्रकट किया व कहने लगा -

"महाराज, मुझमें क्षमता तो नहीं है परन्तु आपके सत्संग से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ। ऐसे लगता है नाम ही आधार है इस मनुष्य देह में रहते हुए मुक्त होने का। यदि मैं अपनी ओर देखूँ तो असम्भव सा दीखता है, परन्तु आपकी करुणा दृष्टि को देखकर यह सम्भव दीखता है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मुझ जैसा पापी भी तर सकता है।"

महात्मा बोले, "बेटा, नाम का अधिकार तो प्रत्येक प्राणी को है। सभी भगवान के बनाये हुए जीव हैं और सभी के हृदय में उस परम पुरुष का वास है। सभी जीव उसी तत्व के बने हुए हैं। सभी जीव जो काज करते हैं, जिस घर में उनका जन्म हुआ है, यह सब रेखा-रचित और रेखा-बधित है। एक नाम ही है, जहाँ पर जीव को पूर्ण स्वतंत्रता है कि वह चाहे तो अपना वर श्रेय को चुने या प्रेय को चुन ले। जीवन में स्वयंवर चल रहा है सो तुम्हें भी नाम का पूर्ण अधिकार है। परम दयालु भगवान तो सब पर कृपा करते हैं।

चोर सकुचा कर कहने लगा, "महाराज, मैं तो चोर हूँ, बुरा आदमी हूँ"। उसे यह विश्वास ही नहीं हो रहा था कि वह भी पात्र हो सकता है, इसलिये बारम्बार यही कह रहा था कि हे भगवान, 'मैं तो इसके योग्य नहीं हूँ...'

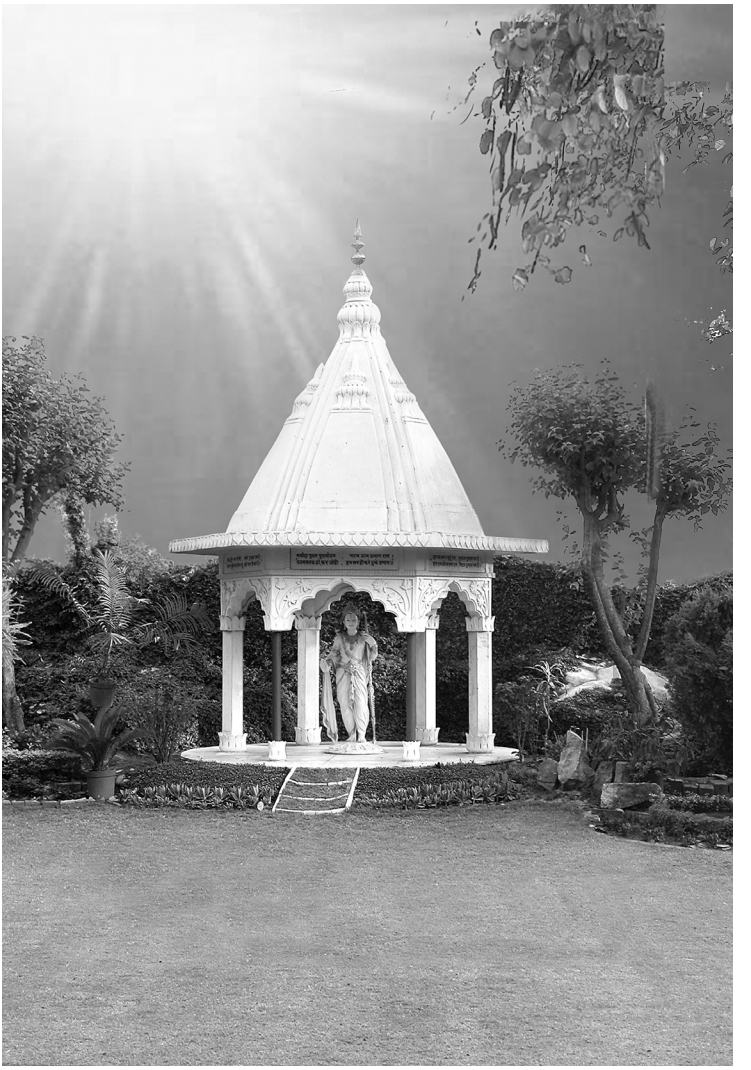

महात्मा कहने लगे, "बेटा, तुम भगवान पर भरोसा रखो! दृढ़ निश्चय करके अपने इरादे को पूर्ण करो और दो काज करो।

१. जहाँ आरती हो रही हो वहाँ पर आरती में सम्मिलित हो जाना और भगवान की आराधना करते जाना। कोई भी कितना आवश्यक काज क्यों न हो भगवान की आरती अवश्य श्रवण करना।

२. जीव से कभी भी झूठ न बोलना।"

महात्मा की बात सुनकर चोर बहुत प्रसन्न हुआ और कहने लगा, "महाराज, यह आपकी आज्ञा तो शिरोधार्य है।" यह कह कर कुछ सोच में पड़ गया। महात्मा जी ने देखा और पूछ लिया, "तुम्हें कौन सी चिंता ने आकर घेर लिया है? ऐसा प्रतीत हो रहा है कि तुम किसी दुविधा में फँस गये हो। वत्स बतलाओ तुम्हारी इस दुविधा का कारण क्या है?"

चोर कर जोड़ी सीस झुकाये कहने लगा - हे श्रेष्ठजन, मैं आपको अपने जीवन का वास्तविक रहस्य बतलाना चाहता हूँ। संतजन के सम्मुख कैसी लाज। यहाँ पर तो संकोच का घूँघट नहीं बनता। मेरी समस्या यह है कि मैं अनपढ़ हूँ, मुझे अपने परिवार को पालने के लिये कोई ढंग नहीं आता। आप ही बतलायें कि मैं क्या करूँ? चोरी तो मैं छोड़ नहीं सकता।

महात्मा ने उसके सरल हृदय तथा मजबूरी को देखा और मुसकुरा कर कहने लगे, "अच्छा वत्स, आधुनिक में अभी तुम अपना पेशा भी निभाते जाओ और साथ साथ जो मैंने कहा है उसका भी अभ्यास करते जाओ।"

महात्मा जी उसके पश्चात् गाँव से चले गये। बहुत वर्ष व्यतीत हो गये। वह चोर नियम बधित सब कुछ करता रहा। उस नाम में उसे बहुत आनन्द आने लगा। चित्त आंतर से पावन होता गया, स्वभाव बदलता गया। सेवा, प्रेम, दया, करुणा और कृपा उसके जीवन के सहज गुण बनते गये। श्रद्धापूर्ण भाव का ऐसा प्रसाद मिला कि आंतरिक मल धुलती गई। मानो उसका तन यंत्र की तरह चोरी करके धन तो कमा लाता है परन्तु उसका चित्त चरणों में टिका हुआ था।

बीस वर्ष पश्चात् वह महात्मा उसी ओर से निकले। वह किसी साथ के गाँव में ठहरे हुए थे। किसी यात्री ने आकर उस गाँव का नाम लिया तो महात्मा जी को गाँव की याद आ गई। कहने लगे, "वह मेरा चोर भक्त कहाँ है? उसका क्या हाल है?" उस गाँव वाले यात्री के हाथ महात्मा जी ने संदेशा भेजा कि वह उसे मिलना चाहते हैं।

चोर के पास जब यह संदेशा पहुँचा तो उसका मन गदगद हो गया। गुरु का संदेश उसके लिये आदेश था। वह उसे किसी भी प्रकार से ठुकरा नहीं सकता था। ऐसा श्रद्धालु था कि गुरु के नाम को धरती पर गिरने दे यह उसे कदापि भी स्वीकार नहीं था। दृढ़ निश्चयी, दृढ़ संकल्पी चोर भक्त तड़प उठा कि अब क्या होगा?

जीव का यह सहज स्वभाव होता है कि वह जैसा काज करता है उसके उसी प्रकार की विधि के भाव मन में उठते हैं। सो उस चोर ने सोचा कि गुरु के आदेश को पालन करने की विधि एक ही है। वह यह कि राजा का घोड़ा चुरा लिया जाये क्योंकि इसके अतिरिक्त वहाँ पर प्रातः तक पहुँचने की और कोई भी विधि नहीं है। उन दिनों आने जाने के और कोई भी साधन नहीं थे। सो, चोर इसी धुन में सवार वहाँ से चल दिया।

वह सीधा अस्तबल पर पहुँचा। दरवाज़ा खोलकर वह अस्तबल की ओर बढ़ा। वहाँ के कर्मचारी अपनी शतरंज की खेल में निमग्न थे। उन्होंने ज्यों ही चोर को देखा वह डट कर खड़े हो गये और पूछने लगे कि तुम कौन हो?

चोर ने उत्तर दिया, "मैं चोर हूँ और चोरी करने आया हूँ।"

चोर की बात सुनकर उन्होंने उस परिस्थिति को अपने दृष्टिकोण से देखा। उसकी बात सुनकर मुसकुरा दिये। उनका यही भाव था कि क्या कभी चोर भी मानता है कि वह चोरी करने आया है। उसे मूर्ख समझ कर उसके वाक् पर ध्यान देने की आवश्यकता न समझी। वह फिर अपनी खेल में निमग्न हो गये।

चोर तबेले में पहुँचा, उसने राजा के घोड़े पर सवारी की और सरपट चाल से चल पड़ा। राजा का घोड़ा बहुत तीव्र गति से भागता था। वह देखते ही देखते हवा की गति से भाग निकला। बाक़ी कर्मचारी यह सब देखते ही रह गये। उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ। वह डट कर भागे क्योंकि यह एक निराली चोरी थी जो उनके सम्मुख हुई थी। उस समय सब जाग भी रहे थे। उन्होंने घोड़े उठाये और सभी पीछे-पीछे भागने लगे। राजा के घोड़े की गति के समान तो कोई भी चल नहीं सकता था।

चोर जब जंगल में से जा रहा था तो उसने देखा कि दूर से मन्दिर में आरती हो रही है। उसे घंटियों की ध्वनि सुनाई देने लगी। उसने सहज में ही घोड़े को बाहर पेड़ के साथ बाँधा और स्वयं आरती के लिये श्रद्धापूर्ण भाव से चल पड़ा। चोर यह जानता था कि कोई उसके पीछे आ रहा है। यह देख कर भी उसके मन में एक पल भी संशय नहीं उठा कि वह लोग मुझे आकर पकड़ लेंगे और मैं गुरु तक पहुँच नहीं सकूँगा। चित्त इतना पावन था कि वहाँ पर प्रधान भाव गुरु आदेश था और कुछ नहीं! सो वह निःसंशय अंदर चला गया। इतने में सब कर्मचारी वहाँ पहुँचे। वह भी अपने घोड़े बाहर बाँध कर चोर के पास आकर पूछने लगे, "क्या तुम राजा का घोड़ा चुरा कर लाये हो?" चोर कहने लगा - "हाँ, मैंने आपको बतलाया तो था कि मैं राजा का घोड़ा चुराने आया हूँ। सो मैं वही घोड़ा चुरा कर चला आया।"

चोर ने देखा कि सब घबराये हुए खड़े हैं। उसने पूछा कि क्या बात है? आप मेरे से ऐसा प्रश्न क्यों कर रहे हैं। चोर को कहने लगे कि एक गम्भीर समस्या सामने आ गई है।

कर्मचारी, "क्या आपने सफेद घोड़ा चुराया था?"

चोर - "हाँ, मैंने राजा का सफेद घोड़ा ही तो चुराया था।"

कर्मचारी, "परन्तु जो घोड़ा बाहर बँधा हुआ है वह तो सफेद घोड़ा नहीं है वह तो काला है।"

चोर ने जब पीछे मुड़कर देखा तो उसे घोड़ा सफेद दिखलाई दिया। यह देख कर चोर गदगद हो कर भगवान के चरणों में खो गया। हृदय कपाट जो बंद थे वह खुल गये। कहने लगा, "हे भगवान, आप धन्य हैं। आप इतना प्रेम करते हैं कि आपने मेरी चोरी को भी नया रंग दे दिया।" यह कहकर उसकी अश्रुधारा बहने लगी। गदगद होकर चरणों में खो गया। कहने लगा, "हे भगवान, आज से मैं यह भी छोड़ता हूँ। जब तू स्वयं पालने वाला है तो मैं क्यों चोरी का गुण अपने पर मढ़ूँ। तू मालिक है, सब तुझ पर छोड़ता हूँ!" यह कह कर वह चरणों में खो गया।

धन्य हैं भक्त और उनके भगवान! ❖

(पुष्पांजलि अभिलेख)

राह भी राम...
साधक है राम...
लक्ष्य भी यह राम है...

गतांक से आगे –

यत्तदद्रेश्यमग्राह्यमगोत्रमवर्णमचक्षुःश्रोत्रं तदपाणिपाद।
नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं तदव्ययं यद्भतयोनिं परिपश्यन्ति धीराः।।

- मुण्डकोपनिषद्, प्रथम मुण्डक - प्रथम खण्ड, ६ श्लोक

शब्दार्थः

वह जो जानने में न आने वाला, पकड़ में न आने वाला; गोत्र आदि से रहित, रंग और आकृति से रहित नेत्र, कान आदि ज्ञानेन्द्रियों से भी रहित और हाथ, पैर आदि से भी रहित है तथा वह जो नित्य सर्वव्यापी सब में फैला हुआ अत्यन्त सूक्ष्म और अविनाशी परब्रह्म है उस समस्त प्राणियों के परम कारण को ज्ञानीजन सर्वत्र परिपूर्ण देखते हैं।

तत्व विस्तारः

अपरा ध्याये उपलब्ध रे जो, उसकी देख रे कह आये।
स्थूल लोक की पूर्ण बतियाँ, वहीं पे रे वह कह आये।।

बाह्य उत्पत्ति जग यह, अपरा विद्या का ज्ञान है।
कर्मण का जो खेल है, विश्वलोक भी नाम है।।

पूर्ण स्थूल का ज्ञान जो, अपरा विद्या में आ जाये।
अनेकों मन्त्र रे वह कहें, जो ध्याये सब पा जाये।।

परा विद्या की अब कहें, ध्याये को' परिणाम मिले।
नाम मग्न जो हो जाये, परम सत्त्व मेरा राम मिले।।

परा विद्या अनुयायी जन, बस उस ब्रह्म को चाहते हैं।
अचिन्त्य अग्राह्य अदृश्य, अगोचर सत्य को चाहते हैं।।

वर्ण रहित आकृति रहित, इन्द्रिय रहित को चाहते हैं।
हस्त पाद कर्मेन्द्रिय भी, वर्जित सत्त्व को चाहते हैं।।

सर्व स्थित वह नित्य विभू, सर्वगत को चाहते हैं।
सूक्ष्म अति सूक्ष्म जो, अव्यय सत्त्व को पाते हैं।।

आदिकारण पूर्ण का, सर्वात्म को जान ले।
अद्वैत तत्व अखण्ड रस, एक भये वह जान ले।।

शब्द राशि सों जो परे, शब्द जहाँ नहीं पहुँच सकें।
भाव प्रवाह राह में रुके, वहाँ पहुँच वह न सके।।

परा विद्या संकेत सों, परम की बताती है।
अद्वैत तत्व मेरे राम की, राहें देख सुझाती है।।

अदृश्य वह अरे दृष्टि का, विषय नहीं जिसे पाना है।
दीप्यमान पूर्ण करे, परम द्रष्टा रे पाना है।।

अपनी खोज में आप चला, आप को देख न आप सके।
अपना आप उसे क्या मिले, नित्य आप वह आप रहे।।

परा विद्या यह कहती है, और राहें यह दर्शाये।
क्योंकर आप में आप ही, पुनः लय रे हो जाये।।

अज्ञान आवरण जो चढ़ा हुआ, उसको यह दिखाये है।
अविद्या सों अविद्या को, आप ही यह मिटाये है।।

परा अपरा यह मायिक हैं, माया में ही होती हैं।
परा ब्रह्म की विद्या है, दूजी वा राहें होती है।।

परा ओर ज्यों ज्यों बढ़े, श्रेय पथ का अनुयायी भये।
अपरा विद्या प्रेय पथ कहो, देख स्वतः ही दूर भयें।।

अतीन्द्रिय तत्व अग्राह्य तत्व, अचिन्त्य सत्त्व को दर्शाये।
अगोचर जो अमूर्त जो, परम सत्त्व की बतलायें।।

भाव जहाँ तक न पहुँचे, भाव वही कह समझाये।
भाव भाव को छोड़ दे, मन मिटे समझ जाये।।

मनो गति अरे मायिक है, मायापति को पाना है।
सब मिटाकर या कहलो, मनोपति को पाना है।।

दूजा हो तो ग्रहण करे, अपने आपका ग्रहण है क्या।
नाम रूप सों जो है परे, उपाधि रहित का ग्रहण है क्या।।

अजन्म है वह गोत्र रहित, सर्व गोत्र वह आप है।
स्वप्न द्रष्टा स्वप्न न ले, स्वप्न परे वह आप है।।

वर्ण कहाँ जब जन्म नहीं, पर सर्व गुण रे उसके हैं।
गुण कहाँ जब तन ही नहीं, पर सर्व गुण उसके हैं।।

वह गुणातीत वह कालातीत, वह भाव रहित है सत्त्व मेरा।
उपमा रहित अरे अंग रहित, कर्मातीत है सत्त्व मेरा।।

इन्द्रियगण की बात नहीं, स्वप्न की इन्द्रिय किसकी है।
द्रष्टा की इन्द्रिय रे कहें, क्या सब इन्द्रिय उसकी है।।

अनेकों तन सपने के, द्रष्टा के चाहे कह लो।
इन्द्रिय गण हर तन के, एक ही उसको कह लो।।

उसी विधि मेरा राम है, सब होकर कुछ न भये।
परा विद्या रे बार बार, इस परम तत्व की ही रे कहे।।

वह अखिल रूप रे आप ही है, सर्वात्म रे उसे कहें।
सर्वेश्वर रे परमेश्वर, अखण्ड रस रे उसे कहें।।

वह विश्व पति विश्वात्म भी, विश्वेश्वर भी उसे कहें।
जगदीश्वर वह परमेश्वर, सर्वेश्वर रे उसे कहें।।

अखण्ड बस वह ही है, परा विद्या दर्शाये है।
इससों उठ कर कैसे मिलें, पथ यह रे दिखलाये है।।

अखण्ड रस अव्यय तत्व, शिव रूप वह राम मेरा।
अद्वैत तत्व प्रकाश रूप, अक्षर सत्त्व वह राम मेरा।।

सूक्ष्म अति सूक्ष्म है वह, महा स्थूल भी वह ही है।
जो कुछ है मन जान ले, एक बस रे वह ही है।।

उसकी राह बतायें यह, परा ध्याये वह परम मिले।
श्रेय पथ का अनुसरण किये, अशरण को शरणा मिले।।

देख री सूक्ष्म बात कहें, स्थूल कारण की यह कहें।
अपरा ध्याये स्थूल मिले, परा सों कारण तक पहुँचे।।

ईश्वर को वह जान ले, माया को पहचान ले।
कर्माशय अरे हृदय लोक, आत्म को भी जान ले।।

प्रज्ञा जागृत हो जाये, सत्त्व को वह जान ले।
ज्ञान प्रदुर प्रकाशित हो, नित्य तत्व वह जान ले।।

सूक्ष्म की नहीं बात कहें, भोक्ता पक्षी जिसे कहें।
मनोलोक अरे आन्तर भी, स्वभाव लोक जिसे कहें।।

तैजस की वही बात कहें, भावना की नहीं कहते हैं।
प्रज्ञा की या विश्व की, बात यहाँ पर कहते हैं।।

कर्म बीज फल रूप वृक्ष, स्थूल रूप वह कह आये।
कर्माशय अरे ईश्वर रूप, की भी देख रे कह आये।।४३।।

स्वभाव भाव रे भावना, जीव रूप की नहीं कहें।
साधक रूप रे यह ही है, जो दोनों का ध्ययन करें।।

श्रेय पथ के अनुसरण का, परा विद्या के ध्ययन का।
परिणाम रे कह दिया, ब्रह्म विद्या ज्ञान का।।

ज्ञान परे का ज्ञान कहें, भाव रहित के भाव कहें।
अचिन्त्य का रे मन कहें, बुद्धि परे की आप कहें।।

सत्त्व स्वरूप वह जान ले, परा विद्या राह दर्शाये।
परा विद्या अनुसरणी ही, परम तलक पहुँच जाये।।

परा विद्या का मूल कहूँ, तो सुनो राम का नाम है।
राह भी राम साधक है राम, लक्ष्य भी यह राम है।।

२४-८-६१

‘दान केवल धन का ही नहीं होता...
दान तो : अपने तन के श्रम, अपने मान,
अपने गुणों, अपनी बुद्धि,
अपने सुख अथवा अपने आप का भी होता है!’

दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्।।

श्रीमद्भगवद्गीता १७/२०

यहाँ भगवान अर्जुन से कहते हैं, अब तू दान के तीन भेद सुन!

शब्दार्थ :

१. देना ही है (यानि, देना ही कर्तव्य है),
२. ऐसा मान कर जो दान,
३. देश, काल और पात्र का विचार करके,
४. अनुपकारी को दिया जाता है,
५. वह दान सात्त्विक है।

तत्व विस्तार :

प्रथम दान समझ ले।

दान :

दान का अर्थ है :

१. समर्पण करना,
२. उपहार देना,
३. पुरस्कार देना,
४. धर्मार्थ की गई उदारता,
५. दान को पवित्रकर भी कहते हैं,
६. किसी की रक्षा करना दान है।

भाई! सात्त्विक दान में :

क) दाता का अभिमान नहीं होता।
ख) 'मैं धनवान हूँ,' ऐसा भाव नहीं होता।
ग) दान लेने वाला भिखारी नहीं होता।
घ) दान नतमस्तक होकर दिया जाता है।
ङ) दान प्रेममय और श्रद्धापूर्ण होता है।

दान देने वाला झुका हुआ होता है। वहाँ सब भगवान के नाम पर दिया जाता है, इसलिए सात्त्विक दान, देने वाले के दृष्टिकोण से भगवान को दिया जाता है। आधुनिक मान्यतापूर्ण दान, दान नहीं है, वह तो केवल दानी का अभिमान है।

जो दान :

१. कर्तव्य मान कर दिया जाता है,
२. अपनी कमाई में भगवान का हिस्सा मान कर दिया जाता है,
३. कर्तव्य को परम देन मान कर भगवान के नाम पर दिया जाता है,
४. दूसरों का हक़ मान कर दिया जाता है,
५. अपने आपको पाषाण हृदय बनने से बचाने के लिये दिया जाता है,
६. अनुकम्पा तथा करुणा से प्रेरित होता है,
७. अपने को ही पावन करने के लिये दिया जाता है,
८. दरिद्र बन कर भगवान को दिया जाता है,

वह दान सात्त्विक है। वह निष्काम भाव से उसे देते हैं, जहाँ से प्रत्युपकार की सम्भावना न हो, कोई कामना पूर्ति की चाह न हो, जहाँ से नाम या मान मिलने की सम्भावना न हो। वहाँ निष्काम दान, श्रद्धा और सत्कारपूर्ण भाव से दिया जाता है।

भगवान कहते हैं, देश, काल और पात्र देख कर दान दो, भले ही दूसरा आपका अपमान भी करे, चाहे वह कृतघ्न ही हो और कभी किसी का उपकार न मानता हो!

भाई! वह कैसा भी हो, इससे आपको क्या प्रयोजन?

दान किस स्थिति में देना चाहिये?

१. आपको तो स्थान देखना है उसका जीवन में और उसके अनुकूल देना है। यानि, जीवन में स्थिति देखनी है पात्र की, उसके अनुकूल देना है।
२. काल देख कर, जब उसे ज़रूरत हो, उचित समय यह दान दिया जाता है।
३. भाग्य देख कर दूसरे को देना है, सो देना ही है।
४. अनुकम्पा अर्थ तूने देना है।
५. शरणापन्न को देना है।
६. वह तुझको ठुकरायेगा, इसपे ध्यान तुम नहीं धरो।
७. वह तुझ पर कलंक लगायेगा, इसपे ध्यान नहीं धरो।
८. वह कृतघ्न है, कृतज्ञ नहीं है, यह तुम्हारे कहने की बात नहीं है।
९. वह कल्याण कभी करता नहीं है, यह तुम्हारे सोचने की बात नहीं है।

भाई! बुरा-भला भगवान पे छोड़ दे। तुमने डूबते को बचाना है, यही तुम्हारा धर्म है। दान रूप औषध देकर तूने तो उसका प्राण बचाना है। ज्यों चिकित्सक के

लिए दुश्मन क्या और सज्जन क्या, उसे तो पूर्ण शक्ति लगा कर मरीज़ को बचाना ही होता है, उसी विधि सत्त्व गुण सम्पन्न दानी को केवल देना ही आता है।

वह तो :

क) केवल गिरे हुए को पुनः उठाता है।
ख) विपद् विमोचक होता है।
ग) दुःखहर्ता होता है।
घ) क्षमास्वरूप ही होता है।
ङ) दोष-दृष्टि पूर्ण नहीं होता।
च) सरल स्वभाव का होता है।

वह दूसरे को क्या तोलेगा, वह दूसरे को क्या देखेगा? उसकी तो बस करुणा बह गई।

नन्हूँ! दान केवल धन का ही नहीं होता, दान तो :

१. अपने तन के श्रम का,
२. अपने मान का,
३. अपने गुणों का,
४. अपनी बुद्धि का,
५. अपने सुख और अपने आप का भी होता है।

यह दान दूसरों को स्थापित करने के लिए दिया जाता है। नन्हूँ ! दान आपने कौन सा, किसको देना है; यह आप जिसको देते हो, उस पर आश्रित है।

जिसे आप दान देते हो,

- वह कहाँ रहता है, यह भी देख लो।
- उसे उचित काल में ही दान देना चाहिये।
- जब दूसरे को उसका लाभ भी हो सके और दूसरे को उसकी ज़रूरत भी हो।

फिर आपको दान देना हो तो किसे दान दे रहे हो, उसे किस दान की ज़रूरत है, उसे वह दान दो। पात्र की पात्रता देखे बिना दान देना मूर्खता है। जिसका वह पात्र है, उसे वही दान दो। नन्हूँ!

क) किसी को प्रेम चाहिये।
ख) किसी को धन की मदद चाहिये तो किसी को नौकरी चाहिये।
ग) किसी को कोई कार्य सीखने में मदद चाहिये।
घ) किसी को डूबते हुए कारोबार में मदद चाहिये तो किसी को कारोबार आरम्भ करने के लिये आपकी बुद्धि चाहिए।
ङ) किसी को अपना टूटा हुआ घर जोड़ना है तो किसी को अपने किसी टूटे हुए नाते से नाता जोड़ना है। किसी का बेटा रूठ गया है तो किसी का पति। किसी की पत्नी रूठ गई है तो किसी की इज़्ज़त लुट गई है।

इन सबको भिन्न-भिन्न प्रकार की मदद चाहिये; इन सबको भिन्न-भिन्न प्रकार का दान चाहिये; ये सब देख कर दान दो, तब ही आपका दान सात्त्विक होगा।

नन्हूँ! जो इन सब प्रकार का दान दे सकता है, वह ब्राह्मी स्थिति में ही होगा। वह दूसरे की परिस्थिति को देख कर अपने उस अंश तथा अंग का दान देगा जिसकी दूसरे को ज़रूरत है। इसका निरन्तर अभ्यास जीव के यज्ञ, तप तथा दान को परम तक पहुँचाता है।

किन्तु नन्हीं! ब्राह्मी स्थिति वाले का दान, सात्त्विक, राजसिक तथा तामसिक दान से परे है। वह तो दान स्वरूप है। उसका अखण्ड मौन ही उसका दान है। उसने तो अपने 'मैं' रूपा अहं और अहंकार को दान में दे दिया होता है।

परिणाम में वह :

१. जग को मानो एक भगवान दान में दे देता है।

२. जग को अध्यात्म प्रकाश दान में दे देता है।
३. जग को ब्रह्म को ही दान में दे देता है।
४. जो आये, वह अद्वैत में स्थित, उसके तद्रूप होकर अपना आप ही दे देता है।
५. अपना स्वरूप छोड़ कर दूसरे की स्थिति के अनुरूप हो जाना सर्वोत्तम दान है।
६. अपना स्वरूप छोड़ कर दूसरे की स्थिति के अनुसार कर्म संलग्नता ही सर्वोत्तम दान है।

ऐसा स्वरूप स्थित, देश, काल, पात्रता इत्यादि को नहीं देखता, किन्तु स्वतः वैसा करता है जो कि देश, काल और पात्रता के अनुकूल हो। उसकी गाली भी दान है, उसका प्रेम भी दान है।

नन्हीं! वह तो विलक्षण ही है।

यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः।
दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम्।।२१।।

श्रीमद्भगवद्गीता १७/२१

भगवान कहते हैं :

शब्दार्थ :

१. परन्तु जो दान,
२. प्रत्युपकार के लिए,
३. या पुनः फल के उद्देश्य से
४. और क्लेश-पूर्वक दिया जाता है,
५. वह दान राजसिक माना गया है।

तत्व विस्तार :

रजोगुणी दान :

नन्हीं! यहाँ यह रजोगुण सम्पन्न, यानि, लोभ और कामनापूर्ण के दान की बात बता रहे हैं और कहते हैं कि रजोगुणी लोग,

क) प्रत्युपकार की चाहना से दान देते हैं।
ख) इनका दान सकाम होता है।
ग) यानि वे दान देकर भी व्यापार करते हैं।
घ) वे अपना स्वार्थ कभी नहीं भूलते।
ङ) वे वास्तव में अपनी ही स्थापति अर्थ दान देते हैं।

भाई वे चाहते हैं कि :

१. मान मिल जाये।
२. प्रतिष्ठा हो जाये।
३. धन मिल जाये।
४. कोई चाकर बन जाये।
५. कोई समर्थक मिल जाये।
६. इनकी हर बात में लोभ तथा कामना छिपी होती है।
७. इन लोगों की सेवा और दान भी कामनारहित नहीं होते।

ये लोग बड़े-बड़े काम करते हैं, बड़ा-बड़ा दान देते हैं, परन्तु इनसे दान निकलवा लेना बहुत कठिन है। क्योंकि ये :

क) अनुकम्पा अर्थ दान नहीं देते।
ख) करुणा से प्रेरित होकर चिकित्सालय नहीं बनवाते। ये तो नाम कमाने के लिये बनवाते हैं।
ग) ये लोग यदि जग की सेवा भी करते

हैं, तो वह भी नाम कमाने के लिए।

घ) ये किसी को अपने एहसान के नीचे दबाने के लिए दान देते हैं या किसी से अपना काम करवाने के लिए दान देते हैं।

ङ) ये लोग दूसरे को दबा कर, दूसरे को झुका कर, दूसरे को दुःखी करके और दूसरे का आत्मसम्मान छीन कर दान देते हैं।

ये स्वयं दम्भ, दर्प, अहंकार पूर्ण लोग हैं। जहाँ से कुछ न मिले, वहाँ ये दान नहीं देते। रजोगुणी किसी के दबाव के नीचे आकर भी दान दे देते हैं। ये ख़ुशी से दान नहीं देते, भाई! मजबूरी से देते हैं, दुःखी होकर देते हैं। यही राजसिक दान है।

अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते।
असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम्।।२२।।

श्रीमद्भगवद्गीता १७/२२

अब तामसिक दान की कहते हैं :

शब्दार्थ :

१. जो दान बिना देश काल के,
२. बिना सत्कार किए,
३. तिरस्कार पूर्वक
४. और कुपात्रों को दिया जाता है,
५. वह तामसिक कहा गया है।

तत्व विस्तार :

तामसिक दान :

तामसिक दान वह है जो,

क) दूसरे की स्थिति देखे बिना,
ख) दूसरे की जगह देखे बिना,
ग) आधुनिक परिस्थिति देखे बिना,
ङ) दूसरे को तुच्छ मान कर,
च) आदर रहित दिया जाये,
छ) जिस दान से दूसरे की गिरावट हो,
ज) यानि, उपहास करके जो दान दिया जाये,
झ) अपमान करके जो दान दिया जाये,
ञ) कटुतापूर्ण भाव से जो दान दिया जाये,
ट) कटाक्ष सहित जो दान दिया जाये, वह तामसिक दान है।

जो आप अंधों की तरह देते हैं, उस दान को आप तामसिक जानिये।

उस दान में,

- पात्र को नीचा दिखाया जाता है।
- पात्र को निकृष्ट बताया जाता है।
- पात्र के प्रति घृणा होती है देने वाले की।
- देने वाला दातृत्व भाव गुमानी होता है।

तमोगुणी लोग मोहपूर्ण तथा अज्ञानी होते हैं। ये लोग आसुरी सम्पदा सम्पन्न होते हैं और धन का दुरुपयोग करते हैं।

कमला देख! जहाँ मोह होगा, मोहपूर्ण लोग वहाँ दान देंगे। साधु-संतों को तो ये कम ही दान देंगे। वास्तविक साधु-संतों, लोक-सेवक संस्थाओं का ये निरादर और

तिरस्कार ही करते हैं, किन्तु यदि वहाँ से व्यापार में नाम और लाभ मिल जाये तो ये गुप्त दान भी दे देते हैं।

नन्हूँ! ज़रा ध्यान से सुन।

१. मोहपूर्ण, अज्ञानमय तथा मिथ्यात्व रमणी तमोगुणी लोग होते हैं।
२. महा हठीले, बहु पीड़ा सह कर दूसरों का अनिष्ट करने वाले तमोगुणी होते हैं।
३. श्रद्धारहित, कठोर, कुकर्मी व निष्ठुर तमोगुणी होते हैं।
४. धर्म-विरुद्ध आचरण पूर्ण, भ्रष्टाचारी तमोगुणी होते हैं।

कमला! ज़रा सोच लो, ये लोग किसको क्यों पैसे देंगे?

५. किसी के दबाव में तो ये आने वाले नहीं हैं।
६. किसी की कामना से ये रुख़ बदलने वाले नहीं हैं।
७. चोर, डाकू, झूठे, बेईमान तो ये स्वयं हैं।
८. हरे-भरे घर उजाड़ने वाले ये स्वयं हैं।
९. लोगों की आबरू लूटने वाले तो ये स्वयं हैं।

इन मोह तथा अज्ञान रूप अंधकार से बंधे लोगों से मान, प्रेम या धन, कौन निकलवा सकता है? यह तो वहीं हो सकता है, जहाँ इनका मोह हो, जहाँ ये संग कर बैठें।

भाई! इन्हें मोह अपने बच्चों से होता है। इन लोगों के बच्चे अधिकांश दुराचारी होते हैं। ये लोग और इनके बच्चे व्यभिचारी होते हैं।

क) अपने बच्चों से सभी श्रेष्ठता की उम्मीद रखते हैं।
ख) अपने बच्चों को सभी कर्तव्यपरायण बनाना चाहते हैं।
ग) स्वयं वे जैसे भी हों, बच्चे श्रवण कुमार जैसे ही चाहियें।
घ) बच्चों से मोह सहज ही हो जाता है।

ये बच्चे ही इन लोगों का धन निकलवा सकते हैं और फिर उस धन का दुरुपयोग करते हैं। ये लोग बच्चों का तिरस्कार भी करते हैं, ये लोग बच्चों का निरादर भी करते हैं, पर धन भी उन्हीं को देते हैं।

कमला! हर जीव में सात्त्विक, राजसिक और तामसिक अंश होते हैं। देखना तो यह है कि प्रधानतयः वह क्या हैं?

गुणातीत :

गुणातीत की क्या पूछते हो! यदि गुणातीत हो जाये, तो उसकी बुद्धि गुणों से प्रभावित नहीं होगी।

गुण कितने बदलेंगे, यह तो भाव पर आधारित है। भाव से ही स्वभाव बनता है। एक बात तो निश्चित है कि गुणातीत और स्थितप्रज्ञ अपने सम्पूर्ण गुण दूसरों के लिए इस्तेमाल करेंगे। कौन, कब, कैसा आ जाये; कौन, कब, कैसी परिस्थिति आ जाये; जैसी ज़रूरत हो, वे उसी गुण को इस्तेमाल करते हैं। किन्तु,

१. उनकी बुद्धि नित्य निर्लिप्त रहती है।
२. वे कामना, तृष्णा, लोभरहित होते हैं।
३. वे अज्ञान, अप्रकाश, मोहरहित होते हैं।
४. वे प्रकाश और ज्ञान से भी संग नहीं करते।
५. वे तो भगवान की तरह सबको देते हैं। ❖

सद्‌गुरु के क़दमों में बैठने का अर्थ ही यह है कि उन्हें दत्तचित्त हो कर सुनुँ!

श्रीमती पम्मी महता

हमें क्यों तलाश रहती है, कोई ऐसा मिल जाये जो मुझ से ज़्यादा मुझे जान ले!

कौन हो सकता है आख़िर वह?

साधक को किसकी तलाश होती है?

स्वयं को साधक जब टटोलता है, तभी उसे पता चलता है कि उसके साधक मन को सद्‌गुरु की तलाश है। कहाँ मिलता है? यह प्रश्न मन ही मन सालता रहता है... जब तलक इस तलाश को विराम नहीं मिल जाता!

- कौन देता है इस भटकना को विराम...

- कौन है वह जो आंतर मन की पुकार को, इसकी तड़प को, कहीं भी बैठा सुन लेता है...

कोई है ऐसा इस धरा पर, जिसे बुला कर भी बुलाना नहीं पड़ता...

वह तो स्वयं ही पुकार लेता है! उसके बुलावे में शब्द नहीं होते। एक कशिश होती है, जो आपको खेंचती है! और आप, उस तरफ़, जिस तरफ़ से आवाज़ आई है, उधर खिंचते चले जाते हैं।

- कौन है इतना आत्मीय व इतना सुहृदयी, जो हृदय को खेंचता चला जाता है...

- कौन है, जो मुझे बुला रहा है और मेरे क़दम आप मुहारे उस ओर चल पड़ते हैं...

यह सभी आंतर में आत्मीय का रचाया हुआ खेल है! उसके प्यार की डोर है, जो खेंच रही है... और वहाँ तलक ले जाती है जहाँ उनका साक्षात्कार होता है।

अद्‌भुत! अतीव अद्‌भुत दर्शन!

- कौन है यह मेरा जो मुझे लिवा लाया है, अपने दीदार देने को...

- कौन है वह, जो मेरे रूबरू खड़ा है...

कौन है वह, जिसके आगे स्वतः ही हाथ भी जुड़ जाते हैं और सीस भी झुक जाता है। प्रथम मिलन में ही दिल चाहता है उन्हें देखती ही चली जाऊँ! निगाह उठती ही नहीं वहाँ से... क्या नाम दूँ इन्हें... कुछ भी सुझाई नहीं देता। बस उसका साक्षात्कार इतना अंचभित करने वाला है कि हैरतज़दा हुई, सामने खड़ी निहारती चली जा रही हूँ...

आख़िर क्यों? आँखों से ओझल होते हैं तो इत-उत उन्हें ढूँढती है ये आँखें! कैसे दूर हो गये मेरी नज़रों से... पलक झपकते ही मन की आँखों के आगे आ खड़े होते!

अपने प्यार की मासूमियत में यह लुका-छिपी इतनी मनभावन हो गई कि हर दरोदिवार के आगे-पीछे उन्हीं को खड़ा पाती। इतने विलक्षण दर्शन! इतना साधारण दिखने वाला, इतना असाधारण भास रहा है। ज़ाहिर है, वह हम जैसा नहीं है! हम से बिलकुल अलग है...

प्रथम मिलन में ही ऐसा लगा, यह अजनबी होकर भी कितने जाने पहचाने लग रहे हैं!

- कौन हैं यह जो मेरे अपने लगते हैं।

खेल-खेल में ही आप लीलाधर ने कैसी लीला रच दी... ऐसे लगा सारी कायनात इन्हीं क़दमों में झुकी हुई है। मन में भाव उठता, यह अपना परिचय क्यों नहीं देते स्वयं ही!

मन्दिर में जब आई तो सभी को धरती पर सीस धर कर प्रणाम करते देखा। सभी ने कहा, "माँ आ गये!"

पूज्य छोटे माँ ने पहले एक भजन गाया और फिर माँ से प्रश्न पूछा। उत्तर रूप में माँ का प्रवाह बह गया और फिर व्याख्या करके उसे समझाया भी। मन्दिर से उठने के बाद महसूस हुआ कि आप सद्गुरु श्री हरि माँ प्रभु जी हैं! धीरे-धीरे, बहुत ही धीरे-धीरे, यह सत्य सामने आया कि सद्गुरु के क़दमों में बैठने का अर्थ ही यह है कि उन्हें दत्तचित्त हो कर सुनुँ। ताकि जो कहें, आंतर मन की गहराईयों में उतर जाये। यह तभी होगा, जब आंतर मन ख़ामोश होगा और सबसे ऊपर आप प्रभु जी की करुण-कृपा हो तो ही!

जीव के हाथ में कुछ नहीं सिवाय प्रबल इच्छा के... सद्गुरु ही हैं, जो आपको बाहर से उठा, आंतर में धकेल देते हैं। अपनी ज्योत्सना से व जीवन की सत्यता से आंतर भरते जाते हैं। आंतर की कालिमा को धो-धो कर कैसे निर्मल कर देते हैं... जब तलक मेरी काली स्लेट पे, आंतर की कहूँ या 'मैं' की कहूँ... कोई भी परछाईं तक नहीं रहती। तभी

आप इसे करमों वाली बनाकर इस आंतर की काली स्लेट पर अपना नाम लिख देते हैं।

आप माँ भगवन्, स्वयं ही मेरे लिए नाम की महिमा गाने लगते हैं, जब तक आप ही के स्वर हृदय वीणा पर पूर्णतया गूँज नहीं उठते! इस तरह हृदय आपकी आवाज़ सुनने लगता है। यह एक पल की कहानी नहीं, जीवन को उसके अनुरूप ढल जाने की एक वास्तविकता है। जहाँ मेरे नहीं, मेरे सद्गुरु के क़दम चलते ही चले जाते हैं...

इस तरह अपनी रहगुज़र पर डाल कर लिवाये चले जाते हैं, इस अनन्त यात्रा पर... जहाँ आप उस चुम्बकीय शक्ति के पाछे-पाछे निरन्तर चलते जाते हैं। क्योंकि मेरे और प्रभु माँ के बीच केवल उनका नाम है... नाम ही आप श्री हरि माँ प्रभु जी का उस मंज़िल तक ले जाता है जहाँ केवल आप ही आप बसते हैं। उसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए, जो आपने मेरे लिए निर्धारित किया हुआ है। आप ही असीम श्रद्धा व भक्ति भाव से नवाज़ कर व अर्पित व समर्पित भाव से जाने के लिये मुझे प्रेरित किये रहते हैं!

एक ओर मैंने आप ही आपको व अपने क़दमों को ही चलते देखा है... जब मैंने कहा, 'आप माँ मुझे आगे भी ले चलिये' तो आपने कहा, "द्वार तलक तो मैं ले आया हूँ आगे तुम्हें ही चलना है, उस मुकम्मलता तक जाने के लिए! जो पाया है मुझसे, अब उसे ही जीवन में जीते हुये चल। मैं तेरे साथ हूँ, तुझे गिरने नहीं दूँगा... मगर तूने अब जो पाया है, उसी में जीना है तुझे!"

'माँ! आपका आदेश सर आँखों पर' मन ही मन कह कर पूर्णतया आपके श्री चरणन् में झुक कर यही विनीत प्रार्थना सच्चे व सुच्चे हृदय से कर पाई, 'हे श्री हरि नाथ, मुझे गिरने न देना। सदैव मेरा मार्ग प्रशस्त किये रहियेगा - जो आपके क़दमों को हृदय में धारण करते हुये आप ही आप में जी पाऊँ!' आमीन।

ख़ुदा करे, हे श्री हरि माँ प्रभु जी आप ही मेरे प्रभु परमेश्वर हैं! आप ही की परम प्रीत को सदैव धारण किये रहूँ। आपके दिव्य प्रसाद के प्रति अनन्य भाव से अर्पित व समर्पित हुई रहूँ हमेशा।

असीम श्रद्धा व भक्ति भाव से आप ही की,

आपकी अपनी ही

पम्मी

Note - प्रियगण, हो सकता है बहुत कुछ आपको दोहराया हुआ लगे... तो आंतर में आ, इसे खण्डित न कीजिये बल्कि आंतर में इस परम सत्यता का विस्तार करते हुए परम पूज्य श्री हरि माँ के परब्रह्म परमेश्वर होने के दर्शन कीजिये!

अतीव धन्यवाद आप सभी का! ❖

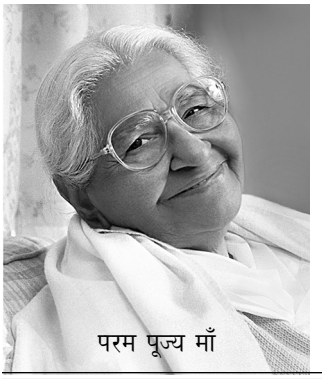
परम पूज्य माँ

अर्पणा
समाचार पत्र

अर्पणा ट्रस्ट, मधुबन,
करनाल, हरियाणा
जून २०१६

अर्पणा समाचार...

साधना दिवस, रामनवमी एवं महा समाधि दिवस

साधना दिवस ९ मार्च २०१६ को मधुबन में मनाया गया। इस दिन परम पूज्य माँ ने प्राचीन शास्त्रों में दीर्घकाल से छिपे सत् के विस्तार में अपनी भक्तिमय खोज प्रारम्भ की। आज भी, ज्ञान और प्रेम से परिपूर्ण उनके शब्द श्रोताओं को आनन्द और आत्मिक स्वतंत्रता के पथ पर चलने को प्रेरित करते हैं।

१५ अप्रैल को रामनवमी भी मित्रगणों एवं श्रद्धालुओं के साथ आनन्दमय वातावरण में मनाई गई।

१६ अप्रैल को परम पूज्य माँ के समाधि दिवस के उपलक्ष्य में श्रद्धालुगण अर्पणा आश्रम में एकत्रित हुए। जीवन की गहराईयों को छू जाने वाले उनके ज्ञान, आशीर्वाद और मार्गदर्शन के प्रति कृतज्ञता से सबके हृदय प्रेम से भरे हुए थे।

पूज्य छोटे माँ की सुमधुर याद में

१० मई २०१५ को अर्पणा परिवार ने अपने अतीव प्रिय पूज्य छोटे माँ को खो दिया। २००८ में परम पूज्य माँ के समाधिस्थ होने के बाद से, आध्यात्मिक शिक्षण की बागडोर सम्भालते हुए, उन्होंने अपने निजी अनुभवों से अलंकृत ज्ञान एवं परम पूज्य माँ के संदेश के साथ संतप्त हृदयों में शाँति तथा अंधकार पूर्ण जीवनों में उजाले का प्रसार किया। उनके देहत्याग के उपरांत पहली बरसी को परिवार एवं मित्रों द्वारा उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई।

अर्पणा कनाडा का जन्म

२१ मार्च २०१६ को, अर्पणा कनाडा को आधिकारिक तौर पर कर मुक्त धर्मार्थ की स्थिति के लिए कनाडा राजस्व एजेन्सी द्वारा पंजीकृत किया गया। दान के लिए राशि चैक द्वारा 'अर्पणा कनाडा' के नाम पर भेजी जा सकती है: श्रीमती सू भनोट, ७ स्कारलैट ड्राइव, ब्रैम्पटन, ओनटारियो L6Y 3S9, कनाडा (+1-905-450-0184). नमन, सू, कैरी एवं अर्पणा कनाडा में सभी का धन्यवाद!

अर्पणा अस्पताल

डायलिसिस मशीन

अर्पणा से हम सभी, उत्तरी आयरलैंड के अपने उदार मित्रों का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने अर्पणा अस्पताल में डायलिसिस मशीन के लिए उदारतापूर्वक दान की राशि दी। अर्पणा अस्पताल गुर्दों से पीड़ित रोगियों का इलाज करने के लिए अब सक्षम है।

गर्भाशय ग्रीवा एवं स्तन कैंसर शिविर

२-३ अप्रैल को, अर्पणा अस्पताल में, महिलाओं के लिए गर्भाशय ग्रीवा एवं स्तन कैंसर शिविर का आयोजन किया गया। डॉ. इला आनन्द FRCOG (स्त्रीरोग विशेषज्ञ), डॉ. विवेक आहुजा MS (सर्जन) एवं डॉ. कविता रानी MS (स्त्री रोग विशेषज्ञ) ने ३३ गाँवों से आये ६८ मरीज़ों की जाँच की।

हिमाचल की गतिविधियाँ

नाबार्ड द्वारा प्रायोजित

१. २७ फरवरी को, किसान उत्पादक सहकारी समिति के ३५ सदस्यों के लिए अर्पणा के गजनोई केन्द्र में 'सरू कृषि संस्थान' द्वारा क्षमता निर्माण प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

२. गजनोई के अर्पणा केन्द्र में दो सप्ताह की पैचवर्क प्रशिक्षण की १ कार्यशाला का आयोजन किया गया, जहाँ ३० स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं ने भाग लिया।

११ फरवरी को, हिमाचल के एक दूरस्थ गाँव भार्यकोठी में एक जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें ६ महिला स्वयं सहायता समूहों से, ३५ सदस्यों ने भाग लिया। यहाँ उन्होंने अपनी बेटियों को शिक्षित करने के लिए सरकार की नई योजनाओं के विषय में सुना।

निःशुल्क स्त्रीरोग शिविर एवं ऑपरेशन

फरवरी - मार्च में डॉ. हेमन्त शर्मा, प्रसूति एवं स्त्रीरोग विशेषज्ञ, ने निःशुल्क स्त्रीरोग शिविर में ३६ रोगियों की जाँच की एवं सत्यम अस्पताल, सुलतानपुर, चम्बा में अर्पणा द्वारा प्रायोजित ११ निःशुल्क ऑपरेशन भी किये। १७ अप्रैल को टिस्सा में एक निःशुल्क स्त्रीरोग शिविर का आयोजन किया गया जहाँ १२१ रोगियों की जाँच की गई एवं ८ रोगियों को निःशुल्क ऑपरेशन के लिए नामित किया गया।

बी. एन. भण्डारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रायोजित एक निःशुल्क एण्डोस्कोपी शिविर

मई २०-२१ को, अर्पणा स्वस्थ्य केन्द्र, बकरोटा, डलहौज़ी में डॉ. राहुल गुप्ता द्वारा निःशुल्क एण्डोस्कोपी शिविर का आयोजन किया गया जहाँ उनके सुपुत्र डॉ. अमन गुप्ता उनके सहयोगी रहे। यहाँ कुल १०५ रोगी आये।

दिल्ली के कार्यक्रम

अर्पणा का वंसत विहार सामुदायिक केन्द्र - 'रिजॉयस'

अर्पणा के वंसत विहार सामुदायिक केन्द्र 'रिजॉयस' में एक कार्यक्रम स्थापित किया गया है। हमारा लक्ष्य, एक ऐसे मंच का निर्माण, जहाँ से वरिष्ठ नागरिक भी समाज में अपना योगदान दे सकें।

'रिजॉयस' में संगीतमय संध्या

समुदाय में संगीत को लोकप्रिय बनाने के लिए एवं युवा संगीतकारों को प्रोत्साहित करने के लिए यहाँ अब तक ३ ख़ूबसूरत संगीतमय संध्याओं का आयोजन किया गया है :

श्री मल्हार रक्षित द्वारा सरोद वादन; डॉ. अपराजिता ब्रह्मचारी द्वारा गायन एवं श्री अदनान खान द्वारा सितार अनुष्ठान।

'रिजॉयस' में वंचित बच्चों के लिए शिक्षा

'रिजॉयस' में २२ प्रतिभाशाली परन्तु वंचित बच्चों के लिए सप्ताह में ३ दिन अंग्रेज़ी बोलने एवं कम्प्यूटर ज्ञान के लिए कक्षायें आरम्भ की गई हैं। एक दिन में ५ सत्रों एवं ७ कक्षाओं के लिए सक्षम स्थान होने पर हमें ३५ स्वयं सेवक शिक्षकों की आवश्यकता है।

श्री बी आर चावला ने ८ अप्रैल को केन्द्र का उद्घाटन किया, ८ कम्प्यूटर भी प्रदान किये; अन्य ३ कम्प्यूटर एवं कम्प्यूटर उपकरण बैजनाथ भण्डारी पब्लिक चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा प्रदान किये गये एवं एम्बैसी ऑफ ऑस्ट्रिया ने अच्छी हालत में, पहले से प्रयोग किये जा चुके १० कम्प्यूटर प्रदान किये।

XII *वीं कक्षा की छात्राओं के लिए अंग्रेज़ी कार्यशालायें*

'रिजॉयस' में २२-२३ अप्रैल को २५ XIIवीं कक्षा की छात्राओं के लिए श्रीमती किरण भट्ट, सीबीएसई अंग्रेज़ी पाठ्यक्रम की एक संस्थापक, द्वारा कार्यशालायें आयोजित की गईं। बढ़ती माँग के अनुसार अन्य कार्यशालायें भी आयोजित की जा रही हैं।

श्रीमती बारबरा महाजन द्वारा प्रदान किये गये एक **होम एन्टरटेनमेंट सैन्टर** (घरेलू मनोरंजन केन्द्र) का ४ मई को उद्घाटन किया गया जहाँ मनोरंजन के साथ-साथ बच्चों की शिक्षा भी होगी।

श्रीमती वीना अग्रवाल, प्रख्यात पोषण विशेषज्ञ, ने पोषण स्वस्थ्य के नवीनतम जीवंत सत्र का आयोजन किया।

अन्य आयोजित सभायें

1. द ग्रेशियस लिविंग फाउंडेशन
2. श्रीमति नीलम मोहन पंचवटी की संस्थापक
3. HCSA, हिडलबर्ग युनिवर्सिटी जर्मनी
4. श्री के. एम. नूरदीन

ग्रामीण हरियाणा

महिला दिवस : *"एक लम्बी रात के बाद, नया सवेरा!"*

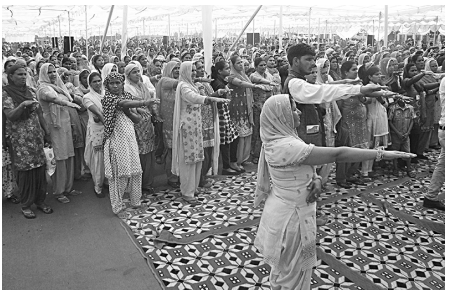

अर्पणा द्वारा गठित स्वयं सहायता समूहों की ७,००० से भी अधिक महिला सदस्यों के आत्मसम्मान, आशा और गरिमा की भावना में वृद्धि हुई। २० मार्च को कुटेल गाँव में एकत्रित होकर सभी ने 'महिला दिवस' का समारोह मनाया।

पुलिस महानिरीक्षक **सुश्री सुमन मंजरी** ने महिलाओं को अपनी शक्ति के निर्माण को जारी रखने का आह्वान किया। करनाल की मेयर **श्रीमती रेणू बाला गुप्ता** ने भी महिलाओं के आत्मविश्वास, ख़ुशी एवं ऊर्जा की सराहना की। **श्री कल्याण**, विधायक, ने भी महिलाओं को ग़रीबी से उभर पाने के लिए बधाई दी। उन्होंने महिलाओं को उत्पीड़न के खिलाफ़ और लिंग भेद एवं समाजिक न्याय के लिए खड़े रहने के लिए शपथ दिलाई।

चण्डीगढ़ में हाथ की कढ़ाई की वस्तुओं की बिक्री

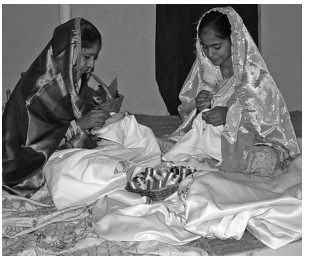

१८-२० मार्च को चण्डीगढ़ के अरोमा होटल में बहुत उत्सुकता से प्रतीक्षित सेल का आयोजन किया गया। बिक्री से उत्पन्न धन राशि को वंचित महिलाओं की आजीविका कमाने और ग़रीबी को कम करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। अर्पणा द्वारा ग्रामीण महिलाओं को हाथ की कढ़ाई में प्रशिक्षण देने के साथ-साथ इन उच्च गुणवत्ता की वस्तुओं की बिक्री भी की जाती है। इन ख़ूबसूरत उत्पादों की बिक्री नई दिल्ली में 'डिवोशन' एवं अर्पणा, मधुबन स्थित दुकान से की जाती है।

We, at Arpana, depend on your support for our programs

Arpana Trust and Arpana Research & Charities Trust are both approved under Section 80G of the Income Tax Act, 1961, giving 50% tax relief for donors in India.

FCRA Registration No. for Arpana Trust is 172310001
FCRA Registration No. for Arpana Research & Charities Trust is 172310002

Send your contribution for dissemination of humane values & medical and community welfare services in Delhi to:
Arpana Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037

Send your contributions for health & development services in Haryana & Himachal to:
Arpana Research & Charities Trust, Madhuban, Karnal, Haryana 132 037

Send contributions in USA to:
AID for Indian Development, Mr. Jagjit Singh, 84 Stuart Court, Los Altos, CA 94022-2249

Send contributions to Arpana Canada:
c/o Mrs. Sue Bhanot, 7 Scarlett Drive, Brampton, Ontario L6Y 3S9, Canada

Arpana Hospital: 91-184-2380801, **Info & Resources Office:** 91-184-2390905
emails: **at@arpana.org and arct@arpana.org**

Please let us know by email or telephone, whenever you transfer funds to Arpana.
Mrs. Aruna Dayal, Director Development. Mobile 91-9873015108, 91-9034015109
Websites: www.arpana.org www.arpanaservices.org

Premier Wealth Creators Pvt. Ltd.

Plan Wisely, Live Fully

"A Goal without a Plan is just a Wish"

Famous Words from most successful Investors in the world:

- **Earning**: "Never depend on single income. Make investment to create a second source".
- **Spending**: "If you buys things you do not need, Soon you have to sell things you need".
- **Savings**:" Do not save what is left after spending, but spend what is left after saving".
- **Risk**: "Never Test the depth of river with both the feet".
- **Investment**: "Do not put all eggs in one basket".
- **Expectation**: "Honesty is expensive gift. Do not expect it from cheap people".

The investor should have a Financial Plan for financial goals. Intelligent investing isn't get-rich-quick process. Neither is it a panacea, or one-size-fits-all process. It is rather a process that allows investors to reach certain financial goals through a carefully crafted financial plan.

Please feel free to call or mail us for:
Rajender Rautela : +918800779485 : rajenderr@wealth-creators.in,

www.wealth-creators.in

Financial Planning **Wealth Management** **Investment Advisory**

Premier Wealth Creators Pvt. Ltd.

Plan Wisely, Live Fully

"A Goal without a Plan is just a Wish"

Have you planned for your Retirement or any other Financial Goal ???. We assist you in reaching your Financial Goal through Financial Planning

Financial Planning Wealth Management Protection Planning Investment Advisory

Call or mail us for:

Rajender Rautela : +918800779485 : rajenderr@wealth-creators.in, www.wealth creators.in